International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 02-09-2025, Accepted: 01-10-2025, Published: 16-10-2025
Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 21-24

रामगढ़ जिले में उराँव जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

सुमन कुमारी[1], डॉ रश्मि[2]
[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्डए भारत
[2] एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड, भारत

सारांश
रामगढ़ जिले में उराँव जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर्यावरणीय क्षरण और पारंपरिक आजीविका के संकट से गहराई से प्रभावित है. झारखंड के गठन और वनाधिकार कानून जैसी नीतियों के लागू होने के बाद भी इन महिलाओं के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं आया है. वनों के उजड़ने और पत्थर उत्खनन जैसी गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हुआ है, जिसका सीधा असर उनकी आर्थिक स्थिति पर पड़ा है. पारंपरिक रूप से, उराँव महिलाएं जंगलों से लकड़ी, कंद–मूल और मौसमी फल एकत्र करने जैसे कार्यों तथा रेशम धागा, तसर और लाह उत्पादन जैसे कुटीर उद्योगों पर निर्भर थीं. हालाँकि, जंगलों के लगातार सिमटने और इन कुटीर उद्योगों के लगभग लुप्त हो जाने के कारण उनकी आय के यह पारंपरिक स्रोत अब उपलब्ध नहीं रहे हैं. इस आर्थिक संकट का प्रमुख परिणाम बड़े पैमाने पर पलायन के रूप में सामने आया है। रोजगार की तलाश में आदिवासी युवतियों और महिलाओं को गाँव छोड़कर बाहर जाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, जहाँ वे अक्सर कम मजदूरी पर शारीरिक श्रम का काम करती हैं. इन चुनौतियों के बावजूद, समाधान का रास्ता वन आधारित आजीविका और कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने तथा पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों में इन महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने में निहित है. साथ ही, झारखंड जैसे संसाधन–संपन्न क्षेत्र में भी व्याप्त गरीबी और कुपोषण जैसी समस्याएं इस बात का संकेत हैं कि समग्र विकास के लिए केवल नीतियां बना देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मूलशब्दः रामगढ़ जिला, उराँव जनजाति / उराँव महिलाएं, आर्थिक स्थिति, पर्यावरणीय क्षरण, पारंपरिक आजीविका, वनाधिकार कानून

झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में निवास करने वाली उराँव जनजातीय महिलाएं आज के समय में एक जटिल आर्थिक संक्रमण का सामना कर रही हैं। एक ओर जहाँ ये महिलाएं सदियों पुरानी सामाजिक–आर्थिक संरचनाओं में बंधी हुई हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के दबाव ने उनकी आर्थिक चुनौतियों को और भी विविध और जटिल बना दिया है। उराँव जनजाति, जो झारखंड की प्रमुख जनजातियों में से एक है, के सामाजिक–आर्थिक ढाँचे में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय परंतु उपेक्षित रही है। रामगढ़ जिला, जो अपने औद्योगिक परिदृश्य और खनिज संपदा के लिए जाना जाता है, में उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण एक बहुआयामी अध्ययन की मांग करता है जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं को समेटे हुए है। उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति केवल लिंग आधारित भेदभाव का परिणाम नहीं है, बल्कि यह जातीयता, वर्ग, भौगोलिक स्थिति और सामाजिक हैसियत के अंतर्संबंधों से उपजी एक जटिल स्थिति है।

उराँव जनजाति की पारंपरिक अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, वन संग्रह और पशुपालन पर केंद्रित रही है। ऐतिहासिक रूप से, उराँव महिलाओं ने इन तीनों क्षेत्रों में अपरिहार्य भूमिका निभाई है। कृषि के क्षेत्र में महिलाएं बीज संरक्षण, रोपाई, निराई, कटाई और भंडारण जैसे समस्त कार्यों में संलग्न रही हैं। वन संग्रह के अंतर्गत वे खाद्य पदार्थ, ईंधन, औषधीय पौधे और बाजार के लिए शहद, लाख, तेंदूपत्ता आदि का संग्रह करती थीं। पशुपालन में भी महिलाओं की भूमिका प्रमुख थी, विशेषकर दुग्ध व्यवसाय और पशु आहार प्रबंधन में। झारखंड की जनजातियों पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार, पारंपरिक उराँव समाज में महिलाओं की आर्थिक भूमिका केन्द्रीय परंतु अदृश्य रही है. हालाँकि उनका श्रम अर्थव्यवस्था का आधारस्तंभ था, परंतु संसाधनों पर नियंत्रण और स्वामित्व पुरुषों के हाथों में केन्द्रित था। इस विरोधाभासी स्थिति ने महिलाओं को श्रम के बोझ तो वहन करने दिए, परंतु आर्थिक निर्णय प्रक्रिया और संसाधन वितरण में उनकी भागीदारी सीमित रही। पारंपरिक उराँव समाज में सामुदायिक स्वामित्व की अवधारणा प्रचलित थी, जहाँ भूमि और वन संसाधनों पर सामूहिक अधिकार होता था। इस व्यवस्था ने महिलाओं को अप्रत्यक्ष रूप से संसाधनों तक पहुँच उपलब्ध कराई, हालाँकि औपचारिक स्वामित्व की स्थिति स्पष्ट नहीं थी। उराँव समाज की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान और कौशल का महत्वपूर्ण योगदान था, विशेषकर बीज संरक्षण और जैव–विविधता के क्षेत्र में।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में गहरा परिवर्तन आया। जंगल कानूनों (ForestA cts) और जमींदारी व्यवस्था के कारण उराँव समुदाय के सामूहिक अधिकार सीमित हो गए और महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच और भी कमजोर हुई। औपनिवेशिक शासन द्वारा व्यावसायिक कृषि को प्रोत्साहन दिए जाने के कारण खाद्य फसलों के स्थान पर नकदी फसलों का उत्पादन बढ़ा, जिससे महिलाओं के पोषण और खाद्य सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। औपनिवेशिक काल में ही पुरुष–प्रधान आर्थिक मॉडल को बढ़ावा मिला, जहाँ भूमि और संपत्ति के अधिकार पुरुषों के हाथों में केन्द्रित होते चले गए। इसने उराँव महिलाओं की आर्थिक निर्भरता को और गहरा किया। आजादी के बाद के काल में भी आदिवासी महिलाओं के अधिकार को पर्याप्त मान्यता नहीं मिली और विभिन्न विकास परियोजनाओं और औद्योगीकरण ने उनके पारंपरिक संसाधन आधार को कमजोर किया।

वर्तमान आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने पर एक जटिल और बहुआयामी चित्र उभरता है। निम्नलिखित तालिका में उराँव महिलाओं के मुख्य रोजगार स्वरूपों और उनसे प्राप्त आय का विवरण दिया गया है:

तालिका 1: रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं के रोजगार के प्रमुख स्वरूप

रोजगार का प्रकार संलग्न महिलाओं का प्रतिशत औसत वार्षिक आय (रुपये) आकस्मिकता की स्थिति
कृषि मजदूरी 45% 15,000 – 20,000 मौसमी, अनियमित
वन उत्पाद संग्रह 35% 8,000 – 12,000 मौसमी, अनियमित
पारंपरिक कृषि 60% 10,000 – 18,000 पारिवारिक श्रम
सिलाई–कढ़ाई 15% 12,000 – 15,000 आंशिक समय
घरेलू नौकरानी 12% 18,000 – 24,000 नियमित
छोटा व्यवसाय 8% 20,000 – 30,000 स्वनियोजित
सरकारी नौकरी 2% 1,20,000+ नियमित

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, उराँव महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में विविधता देखने को मिलती है, परंतु अधिकांश महिलाएं असंगठित और कम आय वाले क्षेत्रों में कार्यरत हैं। केवल 2% महिलाएं ही सरकारी नौकरी जैसे संगठित रोजगार में हैं, जबकि 45% महिलाएं कृषि मजदूरी पर निर्भर हैं जो मौसमी और अनियमित है। इससे उनकी आय में निरंतरता और स्थिरता का अभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

भूमि स्वामित्व

उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण पहलू भूमि स्वामित्व और संसाधनों तक पहुँच है। रामगढ़ जिले में उराँव परिवारों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार, केवल 8% महिलाओं के नाम पर भूमि का स्वामित्व पाया गया, जबकि 45% परिवारों में भूमि पुरुष सदस्यों के नाम पर और 47% परिवारों में भूमि पारिवारिक स्वामित्व में दर्ज थी। भूमि स्वामित्व के अभाव में महिलाएं ऋण के लिए संपार्श्विक (collateral) प्रस्तुत नहीं कर पातीं, जिससे उनका व्यावसायिक विकास सीमित हो जाता है।
झारखंड के संदर्भ में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि जमीन पर अधिकार न होना आदिवासी महिलाओं के पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण है .संसाधनों पर नियंत्रण के अभाव में महिलाएं आर्थिक निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी से वंचित रह जाती हैं और उनकी आर्थिक स्वायत्तता सीमित होती है। इसके अतिरिक्त, ऋण सुविधाओं तक पहुँच में भी लैंगिक असमानता स्पष्ट देखी गई – केवल 22% महिलाओं ने बैंकों से औपचारिक ऋण प्राप्त किया था, जबकि 48% महिलाएं स्थानीय साहूकारों पर निर्भर थीं जो उच्च ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते हैं।
उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में शिक्षा और कौशल विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रामगढ़ जिले के सर्वेक्षण के अनुसार, उराँव महिलाओं में साक्षरता दर 48% पाई गई, जो राष्ट्रीय औसत (65%) और जनजातीय पुरुष साक्षरता दर (68%) से काफी नीचे है। केवल 12% महिलाओं ने माध्यमिक शिक्षा पूरी की और मात्र 5% महिलाएं ही उच्च शिक्षा तक पहुँच सकीं। शिक्षा के अभाव ने उराँव महिलाओं के रोजगार के अवसरों को सीमित कर दिया है। अधिकांश महिलाएं अकुशल श्रम में संलग्न हैं, जहाँ कम मजदूरी और कार्य की अनिश्चितता एक सामान्य स्थिति है। लोहरदगा जिले में आयोजित एक कौशल विकास कार्यक्रम में यह बात उजागर हुई कि तकनीकी प्रशिक्षण से महिलाओं की आय क्षमता में वृद्धि हो सकती है . इसी प्रकार, कैरो प्रखंड में आयोजित आजीविका महिला संकुल स्तरीय वार्षिक सम्मेलन में महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, बागवानी, अचार निर्माण जैसे कार्यों का प्रशिक्षण प्रदान करने पर जोर दिया गया ।

सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ

रामगढ़ जिले की उराँव महिलाओं की आर्थिक प्रगति में सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उराँव समाज में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को सीमित करती हैं। घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है, जिससे उनके पास आय–अर्जन गतिविधियों के लिए समय सीमित हो जाता है। सर्वेक्षण में पाया गया कि उराँव महिलाएं औसतन दिन के 6–8 घंटे घरेलू कार्यों में व्यतीत करती हैं, जिसके बाद ही वे आय–अर्जन गतिविधियों में संलग्न हो पाती हैं। कई गाँवों में युवा महिलाओं को निर्धारित सीमाओं से बाहर काम करने की अनुमति नहीं होती, जिससे उनके रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं। विधवा और तलाकशुदा महिलाओं की स्थिति और भी जटिल है, क्योंकि उन्हें सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है और आर्थिक संसाधनों तक उनकी पहुँच और भी सीमित हो जाती है। झारखंड में महिलाओं पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार, समाज में एकल महिलाओं को कई तरह के शोषण का सामना करना पड़ता है . इसके अतिरिक्त, धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को प्रभावित करती हैं। कुछ क्षेत्रों में महिलाओं को कुछ विशेष दिनों में कृषि कार्यों से दूर रखा जाता है, जिससे उनकी आय में कमी आती है। इन सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं के कारण महिलाओं की आर्थिक क्षमता पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाती।
उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, महिलाओं में निम्न साक्षरता दर उन्हें संगठित क्षेत्र में रोजगार पाने से रोकती है। इसके पीछे कई कारण हैं – स्कूलों की दूरी, लिंग भेदभाव, शिक्षाका खर्च, और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयाँ। सर्वेक्षण में पाया गया कि 60% लड़कियों ने यौवनावस्था के बाद स्कूल छोड़ दिया, जिसमें स्कूल की दूरी और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ प्रमुख कारण थीं। स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों में कुपोषण, एनीमिया और प्रजनन स्वास्थ्य समस्याएँ प्रमुख हैं। 70% उराँव महिलाएं एनीमिया से पीड़ित पाई गईं, जिससे उनकी कार्यक्षमता और उत्पादकता प्रभावित होती है। प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का अभाव और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच महिलाओं के स्वास्थ्य को और भी जोखिम में डालती है। एक गंभीर समस्या महिला कुपोषण की है, जहाँ परिवार में पोषण वितरण में लैंगिक असमानता स्पष्ट देखी गई।

आर्थिक और संस्थागत अवरोध

उराँव महिलाओं के समक्ष आर्थिक और संस्थागत अवरोध भी उनकी आर्थिक प्रगति में बाधक हैं। ऋण सुविधाओं तक सीमित पहुँच एक प्रमुख चुनौती है। औपचारिक वित्तीय संस्थानों द्वारा जटिल प्रक्रियाएँ, संपार्श्विक की मांग और लैंगिक पूर्वाग्रह महिलाओं के लिए ऋण प्राप्ति को कठिन बना देते हैं। परिणामस्वरूप, महिलाएं अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर होती हैं जहाँ उच्च ब्याज दरें और शोषण की संभावनाएँ अधिक होती हैं। बाजार तक पहुँच का अभाव भी एक महत्वपूर्ण अवरोध है। महिलाओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए उचित मूल्य और बाजार की कमी है, जिससे उनकी आय सीमित रह जाती है। मध्यस्थों और दलालों के चक्र में फँसकर महिलाओं को अपने उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव और लाभार्थी बनने की जटिल प्रक्रियाएँ भी महिलाओं तक सरकारी सहायता के प्रवाह में बाधक हैं। लोहरदगा के कैरो प्रखंड में आयोजित एक कार्यक्रम में इस बात पर जोर दिया गया कि संस्था और बैंक के संयुक्त तत्वावधान में महिलाओं को पूंजी उपलब्ध कराकर स्वरोजगार से जोड़कर आर्थिक स्थिति मजबूत की जा सकती है इससे स्पष्ट है कि संस्थागत समर्थन उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

औद्योगीकरण और उसका सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

रामगढ़ जिले में औद्योगीकरण ने उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर जटिल और द्वंद्वात्मक प्रभाव डाला है। एक ओर जहाँ उद्योगों ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं दूसरी ओर इन्होंने पारंपरिक आजीविका के स्रोतों को नष्ट या सीमित किया है। उराँव समुदाय की कृषि भूमि का अधिग्रहण और वन संसाधनों का ह्रास महिलाओं की आर्थिक स्थिति के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया है।

औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक अर्थव्यवस्था का ह्रास हुआ है, जिसमें महिलाओं की भूमिका केन्द्रीय थी। नई औद्योगिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं के लिए सीमित भूमिकाएँ हैं, और वे मुख्यतः अकुशल और अर्द्ध–कुशल श्रम तक सीमित हैं। इसके अतिरिक्त, औद्योगीकरण के साथ आए बाजारीकरण ने महिलाओं के पारंपरिक कौशल और ज्ञान को हाशिए पर धकेल दिया है, जिससे उनकी आर्थिक हैसियत कमजोर हुई है। हालाँकि, कुछ सकारात्मक पहलू भी देखने को मिले हैं। औद्योगीकरण ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में सुधार किया है और यातायात और संचार के साधनों का विकास हुआ है। इसने महिलाओं के सामाजिक दायरे को विस्तारित किया है और उनमें आर्थिक अवसरों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। परंतु समग्र रूप से, औद्योगीकरण का लाभ उराँव पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम और असमान रूप से मिला है।

सरकारी नीतियों और कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव

सरकारी नीतियों और कल्याणकारी योजनाओं ने उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सीमित सकारात्मक प्रभाव ही दिया है। झारखंड सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाएँ जैसे कि मनरेगा (MGNREGA), प्रधानमंत्री आवास योजना, और विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार लाने का प्रयास किया है। लोहरदगा जिले में आयोजित एक कार्यक्रम में मुखियाजनों को कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई , जो इस बात का संकेत है कि सरकार इन योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति गंभीर है। मनरेगा जैसी योजनाओं ने महिलाओं को रोजगार की गारंटी प्रदान की है और मजदूरी में लैंगिक समानता सुनिश्चित की है। सर्वेक्षण के अनुसार, 40% उराँव महिलाएं मनरेगा से जुड़ी हुई हैं और इससे उनकी आय में वृद्धि हुई है। परंतु इस योजना में भी कई कमियाँ देखी गई हैं – मजदूरी में देरी, कार्य दिवसों की सीमित संख्या, और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ अभी भी बनी हुई हैं।

स्वरोजगार योजनाओं जैसे कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने महिलाओं को सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने में सहायता की है। परंतु इन योजनाओं तक महिलाओं की पहुँच सीमित और अपर्याप्त है। जागरूकता के अभाव, जटिल आवेदन प्रक्रिया और परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में कठिनाई जैसी बाधाएँ महिलाओं को इन योजनाओं का पूरा लाभ उठाने से रोकती हैं।

सफल पहल और सशक्तिकरण मॉडल

रामगढ़ जिले की उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कई सफल पहल और सशक्तिकरण मॉडल मौजूद हैं जिनसे सीख लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की जा सकती है। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups) एक ऐसा ही सफल मॉडल है जिसने उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रामगढ़ जिले में 150 से अधिक स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें 2000 से अधिक उराँव महिलाएं जुड़ी हुई हैं। इन समूहों ने न केवल महिलाओं की बचत और ऋण की आदतों में सुधार किया है, बल्कि उन्हें सामूहिक बाजार शक्ति भी प्रदान की है।

लोहरदगा जिले के कैरो प्रखंड में आयोजित आजीविका महिला संकुल स्तरीय वार्षिक सम्मेलन एक ऐसी ही सफल पहल का उदाहरण है. इस कार्यक्रम में महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत करने पर जोर दिया गया। इसी प्रकार, झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (JSLPS) द्वारा संचालित आजीविका मिशन ने महिलाओं को सामूहिक खेती, पशुपालन और छोटे उद्यम स्थापित करने में सहायता की है।

एक अन्य सफल मॉडल सामुदायिक संसाधन प्रबंधन का है, जहाँ महिलाओं के समूहों को वन भूमि, जलाशयों और चरागाहों का प्रबंधन सौंपा गया है। इसने न केवल संसाधनों के संरक्षण में मदद की है, बल्कि महिलाओं को आय के नए स्रोत भी प्रदान किए हैं। इन सफल मॉडलों से स्पष्ट है कि सामूहिक कार्यवाई और संस्थागत समर्थन के माध्यम से उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए कई नीतिगत सुझाव और भविष्य की रणनीतियाँ प्रस्तावित की जा सकती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं:

1. **भूमि और संपत्ति अधिकार:** उराँव महिलाओं को भूमि और संपत्ति के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए कानूनी और प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता है। झारखंड भूमि अधिकार अधिनियम में संशोधन करके महिलाओं के समान अधिकार सुनिश्चित किए जाने चाहिए। साथ ही, सामुदायिक भूमि अधिकार को मान्यता देकर महिलाओं की सामूहिक स्वामित्व में भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

2. **शिक्षा और कौशल विकास:** उराँव लड़कियों की शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। आवासीय विद्यालय, छात्रवृत्ति और शैक्षिक सामग्री का निःशुल्क वितरण जैसे उपायों से लड़कियों की शिक्षा में सुधार हो सकता है। साथ ही, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए।

3. **वित्तीय समावेशन:** उराँव महिलाओं की वित्तीय सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। महिला–सहयोगी बैंकिंग मॉडल, सूक्ष्म वित्त संस्थानों का विस्तार, और डिजिटल वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों से महिलाओं की वित्तीय समावेशन में सहायता मिल सकती है।

4. **बाजार संपर्क:** महिलाओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार संपर्क सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक विपणन, उत्पाद संग्रहण केंद्र और ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म जैसे उपायों की आवश्यकता है। साथ ही, मूल्य संवर्धन और उत्पाद विकास पर ध्यान देकर महिलाओं की आय में वृद्धि की जा सकती है।

5. **सामाजिक सुरक्षा:** उराँव महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार करने और स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और मातृत्व लाभ जैसी सुविधाएँ सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इससे महिलाओं की आर्थिक असुरक्षा कम होगी और उनकी उत्पादक क्षमता में वृद्धि होगी।

झारखंड में महिला अधिकार सम्मेलन में महिलाओं ने रोजगार में 50% आरक्षण की मांग की , जो इस बात का संकेत है कि महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और उनकी

आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के लिए ठोस नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता है।

रामगढ़ जिले में उराँव जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति एक जटिल और बहुआयामी समस्या है जिसके समाधान के लिए बहु–स्तरीय और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। इस शोध से स्पष्ट है कि उराँव महिलाएं अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं – शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच, भूमि और संसाधनों पर अधिकार का अभाव, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ, और आर्थिक–संस्थागत अवरोध। इन चुनौतियों के बावजूद, उराँव महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए सक्रिय और संकल्पित हैं, जैसा कि विभिन्न स्वयं सहायता समूहों और सामुदायिक पहलों में उनकी भागीदारी से स्पष्ट है। उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के समन्वय की आवश्यकता है। सामुदायिक भागीदारी, संस्थागत समर्थन और नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से उराँव महिलाओं की आर्थिक क्षमता को पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है। इसके लिए लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है, साथ ही आर्थिक नीतियों और कार्यक्रमों में महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों को केन्द्र में रखने की आवश्यकता है।

अंततः उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार केवल एक आर्थिक लक्ष्य नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवाधिकार का मुद्दा है। एक समावेशी और समतामूलक समाज के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि उराँव महिलाओं को आर्थिक अवसरों और संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त हो। इस दिशा में सरकार, नागरिक समाज और समुदाय के संयुक्त प्रयासों से ही सार्थक परिवर्तन लाया जा सकता है और उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Gope D, Kumar S, SOCIAL] ECONOMIC AND CULTURAL CHANGES OF THE ORAON TRIBE IN THE CONTEXT OF DHANBAD DISTRICT OF JHARKHAND- ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts,2024:5(6):1714–1725. https://doi-org/10-29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4995
2. लाइव हिंदुस्तान. (2025). लोहरदगा न्यूज़. Retrieved from https://www-livehindustan-com/jharkhand/lohardaga/news
3. गुप्ता, जया. (2019). छत्तीसगढ़ का भगौलिक, राजनीतिक एवं सास्कृतिक परिचय. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 7(1), 239–250.
4. एक्का, एलेक्सियस. (2000). Socio&Economic Transformation of the Oraons- New Delhi: Indian Social Institute.
5. शर्मा, विमल. (2005). Tribal Culture of India- New Delhi: National Book Trust.
6. सिन्हा, सुरजीत. (2002). Tribal Society in India- Kolkata: Indian Anthropological Association.
7. रॉय, एस.सी. (1915). The Oraons of Chotanagpur- Ranchi: Tribal Research Centre.
8. वर्मा, आर.सी. (1990). Indian Tribes Through the Ages- New Delhi: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting. Govt- of India.
9. जक्सा, वर्जीनियस. (2008). State, Society and Tribes: Issues in Post-Colonial India. Pearson Education India.
10. सिंह, के.एस. (1994). The Scheduled Tribes- New Delhi: Oxford University Press.
11. झारखंड मानव विकास रिपोर्ट. (2004 – 2017). Government of Jharkhand.
12. उराँव, सुशीला. (2016). Cultural Identity and Globalization: A Study of Oraon Tribe in Jharkhand- Ranchi University.
13. मिश्रा, बी.एन. (2005). झारखण्ड की आदिवासी संस्कृति. रांची: आदिवासी सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र.
14. मुंडा, रामदयाल. (2010). आदिवासी समाज और संस्कृति. रांची: झारखंड अध्ययन परिषद.
15. तिर्की, जे.पी. (2007). उराँव जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
16. ललकाता, एलिज़ाबेथ. (2012). आदिवासी महिलाएं और सामाजिक परिवर्तन. रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन.